(12) असुर जनजाति

असुर झारखंड की प्राचीनतम जनजाति है ।

- यह आदिम जनजाति की श्रेणी मे आते है ।
- प्रजातीय समूह – प्रोटो ऑस्ट्रोलॉयड
- इनका सर्वाधिक जमाव – पलामू , गुमला , लोहरदगा , सिंहभूम , धनबाद ।
- यह जनजाति मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ मे भी पाए जाता है ।
- असुर जनजाति 3 उपजातियो मे विभाजित है – बीर , बिरजिया , अगारिया
- इस जनजाति मे गोत्र को पॉरिस कहते है ।
- युवागृह – गितिओड़ा

CAREER FOUNDATION
जनून राष्ट्र सेवा का

प्रचलित विवाह

- सेवा विवाह , पलायन विवाह , जबरन विवाह , गोलट विवाह आदि ।
- विघवा पुनर्विवाह तथा तलाक प्रथा विद्यामन है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

अर्थव्यवस्था

- परंपरागत पेशा – लोहा गलाना और औजार बनाना
- ये लोग खेती–बारी भी करते है ।
- अधिकांश गांव पहाड़ो पर बसे है ।
- सर्वोच्च देवता – सिंगबोंगा
- धार्मिक प्रधान (बैगा)

(13) चेरो जनजाति

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- ❖प्रजातीय समूह – द्रविड़
- ❖सर्वाधिक जमाव – पलामू , रांची , हजारीबाग
- चेरो अपने आप को चौहान राजपुत कहते है और नाम के अंत मे सिंह शब्द जोड़ते है ।
- चेरो अपने आप को च्यवन ऋषि का वंशज मानते है ।
- चेरो जनजाति 7 गोत्रों मे विभक्त है ।
- मौआर , कुवंर , सनवत , रौतिया , मांझ , सोहनैत एवं महतो

नोट – झारखंड के अन्य जनजातियों के विपरित चेरो जनजाति मे वर को तिलक चढाने की प्रथा है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

➢ समगोत्रीय विवाह वर्जित है ।

➢ वधू मूल्य (दस्तुरी) प्रथा भी विद्यमान है ।

❖चेरो मे विवाह के तीन रूप प्रचलीत है ।

1. डोला
2. घराऊ
3. चढाऊ

➢ गरीब कन्या पक्ष वाले डोला एवं घरांऊ विवाह करते है जिसमे कन्या को वर के घर ले जा कर विवाह किया जाता है ।

➢ परित्यक्ता के पुनर्विवाह को सगाई कहते है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

➢ अत्यंत गरीब परिवार मे गोलट विवाह की प्रथा मिलती है ।

➢ चेरो गांव को डीह कहते है ।

➢ चेरो जनजातीय पंचायत ' भैयारी पंचायत ' कहलाता है ।

❖भैयारी पंचायत से सम्बंधित प्रमुख पद

- महतो/सभापति
- छड़ीदार
- पंच

➢ चेरो की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है ।

➢ मजदुरी करना – ये अपने प्रतिष्ठा के खिलाफ समझते है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

नोट :– चेरो झारखंड की एकमात्र जनजाति है जो पहाड़ो एंव जंगलो मे रहना पसंद नही करते ।

धर्म

प्रधान देवता – शिव, पार्वती , रक्सेल/दरहा (ग्राम देवता) ,ग्राम देवी , कुल देवता

- चेरो के धार्मिक प्रधान को बैगा कहते है ।
- जादु टोना का विशेष महत्व
- बिमार पड़ने पर ओझा , मती , या भगत की सहायता ली जाती है
- चेरो सदानी भाषा भी बोलते है जो ऑस्ट्रीक भाषा समूह की भाषा है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

(14) बिरहोर जनजाति

- बिर – जंगल
- होर – आदमी

मुण्डारी भाषा के अनुसार

- बिरहोर जंगलो मे रहते है । ये घूमन्तू जीवन जीते है । कुछ ने स्थायी जीवन को अपना लिया है ।
- घूमन्तू जीवन जीने वाले बिरहोर – उलथू/भुलियास

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- स्थाई जीवन जीने वाले बिरहोर – जांघी/थानिया
- प्रजातीय समूह – प्रोटोऑस्ट्रेलॉयड
- बिरहोर अपने आप को सूर्यवंशी कहते है ।
- इनका मुख्य भ्रमण क्षेत्र छोटानागपुर पठार का उत्तर पूर्वी इलाका है।

प्रमुख गोत्र – इंदवार , खेर , गीध , गोलवार , सागलाकूडचटा , करकेटा , टोपवार , सिंगपुरिया , हेम्ब्रम , सवर , हांसदा , संवरिया , भूइयां

- बिरहोर जनजाति का युवागृह – गत्योरा या गितिजोरी
- बिरहोर के निवास स्थल को टंडा कहते है ।
- सर्वश्रेष्ठ विवाह – सदर बापला (माता–पिता के द्वारा तय किया गया विवाह)
- विवाह के अन्य प्रकार – बापला , उदरा उदरी बापला , किरिंग जावे बापला , सिंदुर बापला , बोलो बापला , हिरूम बापला आदि ।
- बहुविवाह की प्रथा विद्यमान है ।
- बिरहोर जनजाति का मुख्य वाद्य यंत्र
  - तुमदा – मांदर या ढोल
  - तमक – नगाड़ा
  - तिरियों – बांसुरी
- प्रमुख देवी देवता – माय , सिंगबोंगा , बुरू बोंगा , बाघबीर, लुगुबुरू , हनुमान वीर , हुंडार बीर

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

(15) चीक बड़ाइक

➢ प्रजातीय समूह– द्रविड़

➢ चीक बड़ाइक एक बुनकर जनजाति है ।

➢ झारखंड मे मुख्य जमाव – रांची ,गुमला, सिमडेगा

चीक बड़ाइक को दो भोगों मे बांटा गया है

1. बड़ गोड़ही (बड़ जात)

2. छोट गोड़ही (छोट जात)

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

❖तीन प्रमुख गोत्र –तनरिया , खम्भा एवं तजना

➢ समगोत्रीय विवाह वर्जित

➢ वधु मुल्य देने की प्रथा विद्यमान है ।

➢ बहु विवाह तथा पुनर्विवाह (संगाई) प्रथा विद्यमान है ।

नोट :– इस जनजाति मे अखरा (नृत्य स्थल) एवं पंचायत व्यवस्था नही मिलती

❖मुख्य पेशा –कपड़ा बुनना

❖मुख्य देवता – सिंगबोंगा

❖मुख्य देवी – देवी माई

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

(16) सौरिया पहाड़िया

- आदिम जनजाति
- प्रजातीय समूह – प्रोटो ऑस्ट्रोलॉयड
- ये अपने आप को मलेर कहते है।
- इन्हे संथाल परगना का आदि निवासी कहते है ।
- मुख्य जमाव – संथाल परगना के अलावा , रांची , हजारीबाग
- गोत्र प्रथा विद्यमान नही है ।
- इस जनजाति मे दो नाम रखने की परंपरा है । (बुरी आत्मा को धोखा देने के उदेश्य से)

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- युवागृह – ' कोड़वाह '
- गोदना गोदने की प्रथा
- विवाह मे लड़की की सहमति आवश्यक मानी जाती है ।
- सामान्यतः एक विवाह की प्रथा है ।
- पुर्नर्विवाह तथा तलाक की प्रथा मिलती है ।
- गांव के मुखिया को ' सियनार ' कहते है ।
- ग्राम अधिकारी – भंडारी/गौड़ैत (संदेशवाहक) गिरि एवं कोतवार
- ग्राम पंचायत का अध्यक्ष – मांझी
- ग्राम समूह – आद्दा
- झुम खेती मुख्य आर्थिक आधार है जिसे कुरवा कहते है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

❖ये जंगलो के बीच बसे पहाड़ियों के शिखर पर छोटी–छोटी बस्तियां बना कर रहते है ।

➢अब ये लोग मैदानी भागों मे बस कर खेती भी करने लगे है ।

➢ये लोग शिकार का भी शौक रखते है ।

धर्म

➢सर्वोच्च देवता – ' लैहू गोसाई

➢अन्य प्रमुख देवता – बेरू गोसाई (सूर्य देवता)

➢बिल्प गोसाई (चन्द्र देवता)

➢जरमात्रे गोसाई (जन्म देवता)

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

➢पो गोसाई (मार्ग देवता)

➢काल गोसाई (काल देवता)

➢धार्मिक प्रधान – मांझी

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

(17) करमाली

- प्रजातीय समूह – ऑस्ट्रोलॉइड
- सदान समूह की जनजाति / दस्तकार जनजाति
- सर्वाधिक जमाव – हजारीबाग , कोडरमा , चतरा , गिरिडीह , रांची , सिंहभूम एवं संथाल परगना
- सात गोत्रों मे विभाजित – कछुवार , सढवार , कैथवार , खलखोहार , करहर एवं तिर्की
- माता–पिता पक्ष के नाते सम्बंधो को छोड़कर विवाह किए जाते है ।
- प्रधान देवता – सिंगबोंगा
- धार्मिक प्रधान – पाहन/नाया
- बधु मुल्य – हँठुआ
- करमाली जनजाति का प्रधान – मालिक
- पंरपरागत पेशा – लोहा गलाना व औजार बनाना 0

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888